आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां | अंक : सातवां | नवम्बर-2013

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71
098 71 50 19 99

उप संपादक
नन्दनी / माया रानी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी
रेनू सचदेवा,
सुमन आनन्द,
परमजीत सिंह

4
जां होए कृपाल
(एक शब्द)

5
शहर का रास्ता
(फरीद साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
मुम्बई

27
सवाल-जवाब
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 नवम्बर 2013 -140- **मूल्य - पाँच रुपये**

जां होऐ कृपाल तां प्रभु मिलाऐ

जां होऐ कृपाल तां प्रभु मिलाऐ, (2)

1. तप–तप, लोहे–लोहे, हाथ मरोरो, (2) (2)
बाबल होई, सो–सो लोरो, जां होऐ कृपाल .....

2. तै सहे मन मह, किया रोष, (2) (2)
मुझ अवगुण सह, नाहीं दोष, जां होऐ कृपाल .....

3. तै साहेब की मैं, सार ना जाणी, (2) (2)
जौवन खोऐ, पाछे पछतानी, जां होऐ कृपाल .....

4. काली कोयल तूं, कित गुण काली, (2) (2)
अपने प्रीतम के हौं, बिरहो जाली, जां होऐ कृपाल .....

5. पिरह वहून, कतह सुख पाऐ, (2) (2)
जां होऐ कृपाल तां, प्रभु मिलाऐ, जां होऐ कृपाल .....

6. बिघ्न खूटी, मुंध अकेली, (2) (2)
ना कोई साथी, ना कोई बेली, जां होऐ कृपाल .....

7. कर कृपा प्रभ, साध संग मेली, (2) (2)
जां फिर देखां तां मेरा अल्लाह बेली, जां होऐ कृपाल .....

8. वाट हमारी, खरी उडीणी, (2) (2)
खंड्यो तिखी बहुत पईंणी, जां होऐ कृपाल .....

9. उस ऊपर है, मार्ग मेरा, (2) (2)
सेख 'फरीदा' पंथ, समार सवेरा, जां होऐ कृपाल .....

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

शहर का रास्ता

फरीद साहब की बानी

मुम्बई

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि यह फुलवाड़ी शहन्शाह कुलमालिक बाबा सावन सिंह जी की है। आप बड़े प्यार से हमें घरेलू मिसालें देकर समझाया करते थे। हम जीव जिन चीजों में फँसे होते हैं सन्त हमें ऐसी ही उदाहरणें देकर समझाते हैं।

बाबा सावन सिंह जी एक बादशाह के लड़के की मिसाल दिया करते थे कि उसका लड़का बुरे लड़कों की संगत में पड़कर पढ़ाई का चोर बन गया, पढ़ता नहीं था। माता-पिता को फिक्र हुआ कि हम राजघराने के मालिक हैं अगर हमारा लड़का नहीं पढ़ेगा तो यह राजकाज का काम नहीं चला सकेगा, राज्य को बर्बाद कर देगा। उन्होंने अच्छे से अच्छा टीचर रखा लेकिन किसी भी टीचर को कामयाबी हासिल नहीं हुई जो उस बच्चे को विद्या दे सकता।

आखिर किसी ने उन्हें सुझाव दिया कि हम संसारी जीवों से जो गुत्थी न सुलझती हो महात्मा उस मसले का हल निकाल देते हैं क्योंकि महात्मा तजुर्बेकार होते हैं वे प्यार से जिंदगी का मसला हल कर देते हैं। बादशाह ने महात्मा के पास जाकर कहा कि मेरा लड़का पढ़ाई का चोर है मेरे जाने के बाद इसके सिर पर बहुत जिम्मेवारियां पड़ेगी यह किस तरह राजकाज संभालेगा?

महात्मा ने बादशाह से कहा, ''कोई बात नहीं तू इस लड़के को हमारे पास छोड़ दे हम इसे पढ़ा देंगे।'' बादशाह महात्मा की बात सुनकर हैरान हुआ कि महात्मा इसे कैसे पढ़ा देंगे! महात्मा ने सबसे पहले लड़के की आदत को समझा। महात्मा ने लड़के से

पूछा, ''बेटा! तुझे किस चीज का शौक है? हम वही काम करेंगे।'' लड़के ने कहा कि मुझे कबूतर उड़ाने का बहुत शौक है। महात्मा ने कहा मुझे भी बचपन में यही शौक था। महात्मा बहुत से कबूतर ले आए फिर महात्मा ने कहा कि अगर हम इन कबूतरों को कोई दुनियावी नाम नहीं देंगे तो हमें कैसे पता लगेगा कि इनमें से कौन सा बीमार है कौन सा तंदरूस्त है? किसने आसमान में उड़ान भरी हुई है और किसने अभी उड़ान भरने की तैयारी करनी है इसलिए हमें इन कबूतरों के नाम रखने चाहिए।

लड़का महात्मा की बात से सहमत हो गया क्योंकि उसके शौक की बात हो रही थी। महात्मा ने किसी कबूतर का नाम 'क' तो किसी का नाम 'ख' रख दिया। सब कबूतरों के नाम रखने के बाद महात्मा ने कहा कि कबूतर ज्यादा हैं अब हम इन अक्षरों को जोड़कर इनके नाम रख देते हैं। लड़का अक्षरों को जोड़कर कबूतरों को नाम से बुलाने लगा और उन अक्षरों को याद करने लगा। महात्मा ने लड़के को पढ़ने के लिए कायदा फिर छोटी किताब दी जिसमें बच्चों के लिए अच्छी-अच्छी कहानियां थी। आखिर बच्चे का पढ़ाई का शौक बढ़ गया वह समझदार हुआ तो उसने खुद ही कबूतरों का ख्याल छोड़ दिया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों के पास जीवों को समझाने के लिए अनेंको किस्म के सुझाव होते हैं। वे हर तरीके से जीव को समझ लेते हैं कि इसकी रूचि किस तरफ है, यह किस मर्ज का बीमार है; इसे क्या दवाई दें।''

हमारे साथ भी जिंदगी में कई ऐसे वाक्यात हो जाते हैं अगर हमारी कोई कीमती चीज धन-दौलत गिर जाए तो हम एकदम दिल पकड़कर बैठ जाते हैं कि अब वह वस्तु कहाँ से लेंगे?

एक आदमी ने जल्दबाजी में ढ़ीली सी गाँठ देकर अपने पल्ले में हीरा बांध लिया। रास्ते में वह गाँठ खुल गई और हीरा गिर गया। वह आदमी भागते हुए फरीद साहब के पास आकर बोला, ''आप महात्मा लोगों को अंतर्यामता होती है, मेरा हीरा गुम हो गया है आप मुझ पर दया करें, बताएं?'' फरीद साहब ने कहा, ''सज्जना! हीरा तेरी लापरवाही से गिरा है अगर तू इसे कीमती समझता तो अच्छी तरह गाँठ लगाता आज तुझे परेशानी न होती।''

यह तो आपने एक दुनियावी मिसाल दी है। यह इंसानी जामा बहुत कीमती है अगर हमें यह ज्ञान हो जाए कि यह कीमती हीरा इंसानी जामा खरीदने से भी नहीं मिलता, मुफ्त में जा रहा है। अगर हम समझदार हों तो उस प्रभु परमात्मा गुरु के साथ पक्का प्यार लगा लें ताकि हमारा यह जीवन सफल हो जाएं।

जे जाणा लड़ छिजणा पीडी पाईं गंढ।।
तैं जेवड मैं नाहिं को सभ जग डिट्ठा हंढ।।

फरीद साहब कहते हैं अगर हम जीवों को समझ हो तो हम गुरु परमात्मा के साथ प्यार की जंजीर को कसकर गाँठ लगा लें कि कहीं यह खुल न जाए, पता नहीं कब मन इस जंजीर को तोड़ देगा! आप फिर कहते हैं, ''हे सतगुरु! मैं सारी दुनिया घूम आया हूँ, मुझे संसार में तेरी तरह कोई नहीं मिला।''

फरीदा जे तू अकल लतीफ, काले लिख न लेख।।
आपनड़ै घर जाईऐ पैर तिनां दे चुंम।।

हमें जिंदगी में जरूरत के लिए कई जगह जाना पड़ता है। एक बार फरीद साहब कचहरी में गए। हमें पता है कि वहाँ हर आदमी ने रिश्वत के लिए मुँह खोला हुआ है, किसी को तनख्वाह याद

नहीं। वहाँ मुंशी पैसे लेकर अगले के हक में फैसला करता था। फरीद साहब का यह पहला ही वाक्या था। फरीद साहब उसे संबोधन करके कहते हैं, ''प्यारेया! तू इतना चतुर-स्याना, पढ़ा-लिखा है लेकिन रिश्वत लेकर अपनी आत्मा को दागी क्यों कर रहा है? तू ऐसे कर्म क्यों कर रहा है जिनका हिसाब तुझे ही चुकाना पड़ेगा। तू अपने दिल में झांककर देख! इन कर्मों को कौन भोगेगा, इनका हिसाब-किताब कौन चुकाएगा?''

फरीदा जो तैं मारन मुक्कीआं तिनां न मारें घुंम।।
आपनड़ै घर जाईऐ पैर तिनां दे चुंम।।

फरीद साहब ने जंगलों में घूम-फिरकर तप-अभ्यास किया। आपने अपनी जिंदगी का बहुत सा हिस्सा तप में बिताया। आप अपने तप में मस्त थे। वहाँ से एक अहंकारी गुजरा, वह रास्ता भूल गया, उसने इशारे से फरीद साहब से **शहर का रास्ता पूछा?**

हमें पता है कि अभ्यासी आदमी हमेशा मौत को याद रखते हैं। फरीद साहब ने कब्रों की तरफ इशारा करके कहा, ''**शहर को यही रास्ता जाता है**।'' वह आदमी काफी दूर तक गया लेकिन आगे कब्रें ही कब्रें थी। उसके दिल में ख्याल आया कि महात्मा ने मेरे साथ मजाक किया है, क्यों न इसे मजाक की सजा दी जाए। उस आदमी ने आकर फरीद साहब को कई थप्पड़ मार दिए लेकिन फरीद साहब मालिक की मौज में हँसते रहे। उस आदमी ने फरीद साहब से पूछा कि महात्मा जी मैंने आपको इतने थप्पड़ मारे हैं लेकिन आपने बुरा नहीं माना।

फरीद साहब ने कहा, ''मैंने तुझे जो **शहर का रास्ता** बताया था वह सही है क्योंकि कब्र ही असली शहर है। हर आदमी ने यहाँ

आकर बसना है।'' मालिक के प्यारों के अंदर नम्रता होती है। वे ईंट का जवाब पत्थर से नहीं देते बल्कि कहते हैं कि तेरा भला हो।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम अपने मतलब के लिए चुप कर जाएं, थप्पड़ भी खा लें कि किसी न किसी तरह हमारा मतलब हल हो जाए तो ऐसी नम्रता भी एक धोखा है।'' महात्मा प्यार से कहते हैं कि नम्रता सच्ची-सुच्ची और ऊँची होनी चाहिए। सच्ची नम्रता परमात्मा को मंजूर होती है। आप कभी भी किसी का बुरा न सोचें। लालची आदमी दूसरे आदमी को डराता है और लालची आदमी ही डरता है। गुरु साहब कहते हैं:

भय काहू को देत नेह भय मानत आन।

मालिक के प्यारे न किसी को भय देते हैं न किसी से भय समझते हैं। उन्हें हमेशा ही अपने गुरुदेव का भय होता है कि कोई ऐसा काम न हो जाए जिससे मेरे गुरु का नाम बदनाम हो या मेरा गुरु नाराज हो जाए।

फरीदा जां तौ खटण वेल तां तू रत्ता दुनीं स्यों।।
मरग सवाई नींह जां भरया तां लदया।।

फरीद साहब उपदेश करते हैं, ''प्यारेया! यौवन अवस्था में परमात्मा से मिलने का मौका था, तब तू विषय-विकारों और दुनिया की मान-बड़ाई हासिल करने में लगा रहा। जब बुढ़ापा आया मौत सामने खड़ी हुई दिखाई दी फिर पछताकर परमात्मा की तरफ लगा कि अब मैं किस तरह परमात्मा को खुश करुं?'' नशहरा में जल्लण जट्ट अच्छी कमाई वाला हुआ है, वह कहता है:

छोटे होंदया डंगर चारे, वड्डे होयां हल वाहया।
बुड्ढे होके माला फेरी, ते रब दा ऊलांबा लाहया।।

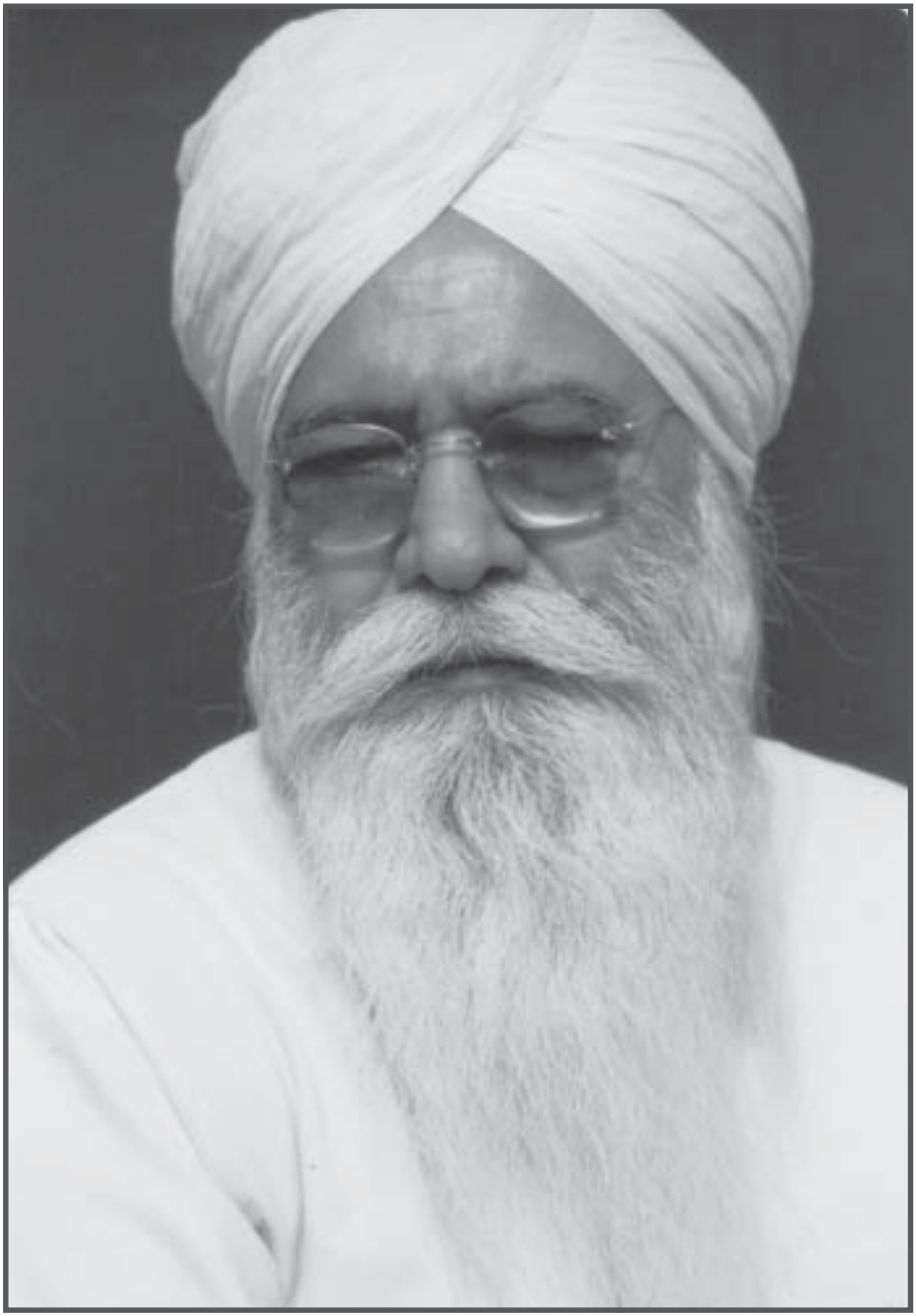

बूढ़े होकर हम कहते हैं कि हे परमात्मा! तू यह न कहना कि हमने तेरी भक्ति नहीं की। हमें पता है कि बूढ़े के ऊपर सारे परिवार का बोझ होता है। वह बैठा हुआ कभी कुछ सोचता है, कभी कुछ सोचता है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

मूर्ख ने यह भार उठाया, अब दुखन से बहु घबराया।

किसने इससे कहा था कि तू यह बोझ उठा? अब घबराता है कभी बेटा कहना नहीं मानता, कभी बहु कहना नहीं मानती। बेटे की मौत हो जाती है रात को नींद नहीं आती तो अपनी चोटी खींचता है। पत्नी नाराज हो जाती है तो उसे मनाने में समय लग जाता है। आप देखें! यहाँ कौन खुश है? तूने अपने भजन-अभ्यास का समय खराब कर लिया, अब बूढ़ा हो गया है मौत सिरहाने खड़ी है। घर के लोग कहते हैं इसे गीता सुनाओ सुखमनी साहब सुनाओ। हमें ये सारे उपाय तो पहले करने चाहिए थे।

देख फरीदा जो थीआ दाढ़ी होई भूर।।
अग्गो नेड़ा आया पिच्छा रहया दूर।।

फरीद साहब प्यार से कहते हैं कि देख प्यारेया! तेरे सिर और मुँह के बाल सफेद हो गए हैं। बचपन, जवानी गुजर गई अब बुढ़ापा आ गया है। तेरी मौत का समय नजदीक आ गया है। पैदाईश का समय दूर हो गया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

यमराजे दे हेरु आए माया संगल बंध लया।

शुरू में हमारे कान के नजदीक थोड़े से बाल सफेद होते हैं। ये सफेद बाल कान के पास आकर कहते हैं कि तूने जवानी तो खराब कर ली अब भजन कर ले लेकिन हम उन बालों को बनावटी रंग लगाकर काला कर लेते हैं; मौत का देवता रंग नहीं देखता।

श्वाँस घट रहे हैं तृष्णा बढ़ रही है। अगर नाम मिला हुआ है उस समय भी भजन करता है तब भी गुरु के आगे अनेकों ही समस्याएं रखता है कि मेरी यह समस्या हल करें, वह समस्या हल करें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर गुरु शिष्य की ऐसी दुनियावी जरूरतों को सुने तो गुरु करोड़ो जन्मों में भी शिष्य को लेकर नहीं जा सकता।'' हमारा और सन्तों का रास्ता शब्द-नाम, परमार्थ और रूहानियत का है। सन्त कभी भी दुनियादारी में दखल नहीं देते। सन्त यह सुझाव देते हैं कि मेहनत करो, उद्यम करो; उद्यमी आदमी दुनियादारी के काम में भी सफल होता है और परमार्थ में भी सफल होता है।''

देख फरीदा जे थीआ सक्कर होई विस।।
सांईं बाझों आपणे वेदण कहीऐ किस।।

आप कहते हैं, ''गुरु के बिना, नाम के बिना बेशक इंसान जुबान से कितनी भी मीठी कथनी क्यों न कर ले कामयाब नहीं हो सकता। हम जिन भोगों को शक्कर, चीनी और शहद की तरह मीठा समझते थे बुढ़ापा आने पर उन भोगों में भी रस नहीं आता।''

आखिरी वक्त पीड़ा होती है आत्मा शरीर से नहीं निकलती। सारी जिंदगी इन्द्रियों के भोग मीठे समझकर भोगे अब ये जहर की तरह कड़वे लगते हैं। गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला अब किस साईं के आगे अपना दुख रोए! किससे कहे मेरी संभाल कर?

फरीदा अक्खीं देख पतीणीआं सुण सुण रीणे कंन।।
साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन।।

फरीद साहब प्यार से कहते हैं दुनिया के रूप-रंग देख-देखकर आँखों की नजर कमजोर हो गई फिर भी ये आँखें संतुष्ट नहीं

हुई। मीठे सुहावने राग सुनकर कान बहरे हो गए हैं, घर के लोग मशीन लेकर आते हैं कि किसी तरह बुजुर्ग से बातें करें। बूढ़ा हो जाता है कान पर मशीन लगा लेता है फिर भी कहता है कि मैं सिनेमा जाकर राग सुनूं।

जब खेती पक जाती है किसान उसे काट लेता है। हमारी भी यही हालत है आँख और कान भी जवाब दे जाते हैं। मौत सिरहाने खड़ी आवाज देती है फिर भी जीने की आशा रखता है। उस समय भी अनेकों शिकायतें है कि भजन करने से गोडे-गिट्टे दुखते हैं ख्याल नहीं टिकता। काल की ताकत हमें भरमा रही है लेकिन जानी दुश्मन मन हमें अंदर नहीं जाने देता बाहर ही रखता है।

फरीदा कालीं जिनीं न राविआ धौलीं रावै कोय।।
कर सांईं स्यों पिरहड़ी रंग नवेला होय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''अगर आपने यौवन अवस्था हाथ से निकाल ली है बूढ़े हो गए हैं फिर भी आप 'शब्द-नाम' की कमाई करें तो आपको नाम का रंग चढ़ जाएगा। किसी भी उम्र में परमात्मा को याद करें परमात्मा आपकी भक्ति को परवान करेगा।''

महाराज सावन हमेशा ही कहा करते थे, ''परमात्मा मेहर करे अगर जवानी में ही नाम मिल जाए, हमें हिम्मत करके उस समय मीठे चावलों पर हाथ मार लेना चाहिए। अभ्यास करके मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाना चाहिए अगर जवानी चली गई है तो बुढ़ापे को मत जाने दें।''

ध्रव, प्रह्लाद छोटे बच्चे थे, उन्होंने भक्ति की परमात्मा ने उन्हें अपने चरणों में जगह दी। गुरु अमरदेव जी महाराज बहत्तर साल की उम्र में गुरु चरणों में आए। आपने तन-मन से 'शब्द-नाम' की

कमाई की। आपने श्रद्धा प्यार से लंगर की सेवा की, पानी भरकर लाते रहे। गुरु ने आपको जो हुक्म दिया आपने गुरु के हुक्म की पालना की। आपके गुरु ने आपको अपनी गद्दी सौंप दी। आप किसी भी अवस्था में परमात्मा को याद करें परमात्मा आपको कबूल करने के लिए तैयार है।

फरीदा काली धौली साहिब सदा है जे को चित करे।।
आपणा लाया पिरम न लगई जे लोचै सभ कोय।।
एह पिरम प्याला खसम का जै भावै तै देय।।

गुरु अमरदेव जी महाराज फरीद साहब को प्यार से कहते हैं देख भई सज्जना! अगर जवानी में नाम मिल जाए तो परमात्मा से मिलना बहुत आसान होता है। बूढ़ा जो काम देर से करता है जवान वही काम जल्दी कर लेता है अगर बूढ़ा दो घंटे कमर सीधी करके भजन में बैठ सकता है तो जवान आठ-दस घंटे कमर सीधी करके भजन कर सकता है। जवानी में भक्ति करना इतना मुश्किल नहीं जितना बुढ़ापे में मुश्किल है।

अमरदेव जी को बुढ़ापे में गुरु की शरण मिली थी। यह अपने बस की बात नहीं कि हम जब चाहे 'नाम' प्राप्त कर लें। यह परमात्मा ने अपने हाथ में रखा है कि प्यार का प्याला किसे और कब देना है; किसका वक्त आया हुआ है?

मैं बताया करता हूँ कि यह परमात्मा का खुद का न्याय होता है कि किस आत्मा को दुनिया में ख्वार करना है, किस आत्मा को अपने साथ जोड़ना है। परमात्मा ने जिन आत्माओं को अपने साथ जोड़ना होता है उनमें ही नामदान की ख्वाहिश पैदा होती है, वही आत्माएं नामदान प्राप्त कर सकती हैं। गुरु के लिए दूर या नजदीक

का कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरु चाहे समुंद्र पार करके जाए या पहाड़ो की चोटियों पर जाए या उस आत्मा को अपने पास बुलाए।

हमारे हुजूर महाराज परम पिता कृपाल कहा करते थे, ''जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा है उसे पता है कि आग किस जगह भड़क रही है।'' इसी तरह महात्मा ऊपर सचखण्ड में बैठे हुए देख रहे हैं कि किस आत्मा में तड़प है, मैंने किससे मिलना है। जिस आत्मा का वक्त आ जाता है, महात्मा उस पर नाम का रंग चढ़ा देते हैं।

हमारे हुजूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''इंसान का बनना ही मुश्किल है भगवान को पाना मुश्किल नहीं। परमात्मा अच्छे इंसान की तलाश में है।'' मैं बचपन से ही पूरे महात्मा की तलाश में था। मैं कई महात्माओं के पास गया इसी खोज में मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला। आपने मेरी जिंदगी की अच्छी नींव डाली। मैंने जमीन के अंदर बैठकर बहुत साल तक अभ्यास किया मुझे सच्चाई की तलाश थी लेकिन तृप्ति नहीं हुई।

एक वक्त था जब महाराज सावन ने मुझसे कहा था, ''दूसरी मंजिल से ऊपर की वस्तु देने वाला खुद तेरे घर आएगा।'' मैं उस वक्त की इंतजार में बैठा था। उसे पता था कि कौन मेरी याद में कहाँ बैठा है? जब वक्त आया तो उसने खुद ही अपना एक सेवक मेरे पास भेजा जिसने आकर कहा, ''महाराज! तेरे आश्रम में आना चाहते हैं।'' मुझे बहुत खुशी हुई कि उस महान सावन का कहना ठीक था। मैं अठारह साल से जमीन के अंदर बैठा था वह खुद ही आकर मिला, परमात्मा गुरु सबको देखता है।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं परमात्मा जिसके ऊपर खुश हो जाता है उसे प्यार का प्याला दे देता है। जिसे यह बड़ाई

देनी है कि तू जिसे 'नाम' देगा मैं उसे अपने चरणों में रखूंगा; यह उस मालिक ने अपने हाथ में रखा हुआ है।

फरीदा जिन लोयण जग मोहया से लोयण मैं डिठ।।
कजल रेख न सहंदियां से पंखी सूय बहिठ।।

एक बार फरीद साहब कब्रिस्तान से गुजर रहे थे। वहाँ किसी का शव बाहर निकला हुआ था। कई बार ऐसा हो जाता है कि कुत्ते शव को बाहर निकाल लेते हैं। उस शव का माँस कीड़ो ने खत्म किया हुआ था, आँखों वाली जगह पर जाले लगे हुए थे। जाले में छोटे-छोटे जानवरों ने अंडे और बच्चे दिए हुए थे। यह देखकर फरीद साहब अफसोस से कहते हैं, ''जिन आँखों से हम दुनिया को मोह लेते हैं, पत्नी पति को और पति पत्नी को मोह लेता है।'' इन आँखों में ही सब कुछ हैः

ओ अक्ल के अंधे देख ज़रा, तैनूं सतगुरु दित्तियां अक्खियां ने,
हर कदम ते ठोकर खाना ऐं, ऐहे अक्खियां कास नूं रखियां ने,
कई मारे मर गए अक्खियां दे, कई तारे तर गए अक्खियां दे,
ऐ ज़हर ते अमृत अक्खियां विच, ऐ रमजां किसने लिखियां ने,

हमारे हिन्दुस्तान में आमतौर पर लड़कियाँ आँखो में काजल लगाती हैं अगर काजल मोटा हो तो आँखो में रिड़कने लग जाता है। जो आँखे मोटे काजल को भी नहीं सहती थी आज उन आँखों के अंदर जानवरों ने अपने घौंसले बनाकर बच्चे दिए हुए हैं। अफसोस! अगर तूने भजन किया होता इस जिंदगी में परमात्मा से मिला होता तो आज तेरा पिंजर इस तरह बर्बाद न होता।

फरीदा कूकेंदया चांगेंदया मत्तीं देंदयां नित।।
जो सैतान वंझाया से कित फेरह् चित।।

फरीद साहब कहते हैं मालिक हमेशा ही अपने प्यारे महात्माओं को संसार में भेजता है। महात्मा सतसंग के जरिए हम लोगों को समझाते हैं कि प्यारेयो! आप बहे जा रहे हो, बचो! इस संसार में से कोई भी आपके साथ नहीं जाएगा। पति पत्नी के मुँह की तरफ देखता रह जाता है पत्नी चली जाती है। इसी तरह पत्नी पास खड़ी होकर देखती रह जाती है पीटती है कि तेरे बिना मेरा कौन है? लेकिन कोई मदद नहीं कर सकता। माता-पिता बैठे हैं, बच्चे चले जाते हैं। महात्मा होका देकर कहते हैं कि इस संसार में आपका कौन है? गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैंः

जगत में झूठी देखी प्रीत।
अपने ही हित स्यों सब लागे क्या दारा क्या मीत।
मेरो मेरो सबहों कहत है हित स्यों बाँधयो चीत।
मन मूर्ख अजे न समझयो सिख दा हारयो नीत।
नानक भौजल पार परे जे गाए प्रभु दे गीत।

अगर आप परमात्मा का भजन करें तभी इस भवसागर से पार हो सकते हैं। महात्मा बार-बार जोर देकर हमें समझाते हैं कि कौन सी चीज आपके फायदे की है? गुरु रामदास जी कहते हैंः

सन्तों सुनों सुनों जन भाई गुरु काढ़े बाँह कुकीजे।

जिस तरह मल्लाह अपने बेड़े को समुद्र के किनारे खड़ा करके लोगों को होका देकर कहता है कि जिन्होंने समुद्र की लहरों से बचकर दूसरे किनारे जाना है वे मेरे बेड़े में आकर बैठ जाएं। मैं तजुर्बेकार हूँ, मेरी जिम्मेवारी है कि मैं इस बेड़े को दूसरे किनारे पर जाकर लगा दूंगा, आप सही सलामत पहुँच जाएंगे।

जैसे मल्लाह होका देता है उसी तरह गुरु भी संसार में नाम का बेड़ा लेकर आता है। गुरु कहता है, ''प्यारेयो! मुझे परमात्मा

की तरफ से आर्शिवाद मिला हुआ है अगर आप इस नाम के बेड़े में बैठ जाएंगे तो आप भी पार हो जाएंगे।''

जे आत्म को सुख नित लोड़ो तो सतगुरु शरण पवीजे।

अगर आप अपनी आत्मा को शान्ति देना चाहते हैं, परमात्मा के साथ मिलाना चाहते हैं तो आप महात्मा की शरण प्राप्त करें।

फरीदा कूकेंदयां चांगेंदया मत्ती देंदयां नित।।
जो सैतान वंझाया से कित फेरह् चित।।

जिन्हें काल ने बहकाया हुआ है वे इस दुनिया को और दुनिया के पदार्थों को सच्चा समझते हैं कि मौत तो और लोगों के लिए है। काल के बहकावे में आए हुए लोग कहते हैं कि सोचेंगे अगर समय मिला तो महात्मा से नाम ले आएंगे। वे अपनी प्लेनिंगे ही बनाते रह जाते हैं, मौत आकर गला दबा देती है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

मनमुख जे समझाईए भी औजड़ जाए।

जिन्हें शैतान मन ने उल्ट तरफ लगाया हुआ है, आप उन्हें चाहे जितना मर्जी प्यार-प्रेम से समझा लें वे परमार्थ की तरफ आ ही नहीं सकते। आप कहते हैंः

मनमुख ते गुरमुख दा हो नहीं सकदा मेल।
वक्खों वक्ख दोहां दा रस्ता ज्यों पानी ते तेल।
ईक डोबे दूजा तारे ऐह है अजब प्रभु दा खेल।
ईक बाप दे दो बेटे एक पास ते दूजा फेल।

मनमुख और गुरमुख दोनों ही परमात्मा के बच्चे हैं। जिस तरह एक स्कूल में एक पिता के दो बच्चे जाते हैं, एक अच्छी तालीम हासिल करके अफसर बन जाता है और दूसरा जानवरों की तरह

फिरता रहता है। यह प्रभु का अजब खेल है जिस तरह पानी और तेल का मिलाप नहीं होता इसी तरह नाम के रसिए और दुनियादारों का मिलाप नहीं हो सकता। महात्मा दुनिया के कर्मकांडो को छिलका और नाम की कमाई को गिरी प्राप्त करना कहते हैं। मालिक के प्यारे हमेशा ही हमारा ख्याल छिलके से हटाकर गिरी की तरफ लगाते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

पानी मथे हाथ कुछ नाहीं खीर मथन आलस भारा।

चाहे आप पानी में जितना मर्जी मधानी घुमा लें उसमें से मक्खन नहीं निकलेगा। जब दूध में मधानी घुमाएंगे तभी मक्खन निकलेगा। हम दूध बिलोने में आलस करते हैं क्योंकि हम 'सुरत-शब्द' का अभ्यास करने में आलसी हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बुरे काम को उठ खलोया, नाम की वेला पे पे सोया।

शैतान ने जिन्हें गुमराह किया हुआ है चाहे उन्हें महात्मा कितना भी समझा लें, अच्छे से अच्छा वेद-शास्त्र सुना लें उन्होंने मानना ही नहीं।

फरीदा थीओ पवाही दभ।। जे साईं लोडह् सभ।।
इक छिजेंह् बिआ लताड़ीऐ।। तां सांईं दै दर वाड़ीऐं।।

किसी आदमी ने फरीद साहब से विनती की, ''महात्मा जी! मुझे परमात्मा को पाने का साधन और तरीका बताएं, क्या मुझे परमात्मा के दरबार में जाने का मौका मिल सकता है?''

फरीद साहब एक बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं, ''देख प्यारेया! अगर तू परमात्मा को प्राप्त करना चाहता है तो तू अपने मन को घास की तरह बना ले। कोई घास को पैरों से लताड़ता है, कोई दाती से काटता है, कोई घास को पीसकर

उसकी चटाई बना लेता है लेकिन घास किसी को बुरा नहीं कहता सबके साथ प्यार करता है। प्रेमी लोग सतसंग में चटाई पर बैठकर भजन-अभ्यास करते हैं। ऐसा करने से तुझे साईं के दरबार में जाने का मौका मिल जाएगा। भजन करने वाले को महात्मा की कुछ शर्तें अवश्य पूरी करनी पड़ती हैं। लोकलाज छोड़नी पड़ती है। लोगों के ताने-मेहणे झेलने पड़ते हैं। पदवी का ख्याल भी छोड़ना पड़ता है और मन जो हमारा जबरदस्त दुश्मन है इसके साथ लड़ाई मोल लेनी पड़ती है।'' तुलसी साहब कहते हैंः

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम।
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम।।

रण में मर जाना या मार देना एक घड़ी का काम है। मन के साथ बिना हथियार रोज का ही संग्राम है। सतगुरु ने हमें शब्द-धुन के हथियार के साथ लेस किया हुआ है। गुरु नानकदेव कहते हैंः

मैं ते पंज जवान गुरु थापी दित्ती कंड जिओ।

हमारे मन और आत्मा की सीट तीसरे तिल, हमारी आँखों के पीछे है। पाँचो डाकू - काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल बैठक भी यहीं सूक्ष्म त्रिकुटी में है बेशक आत्मा अकेली है लेकिन तू अंदर होकर देख तेरा पूरा गुरु तेरे साथ है। तुझे जिस चीज की जरूरत होगी गुरु अंदर ही पूरी करेगा यह उसकी ड्यूटी है। आप अंदर जाकर देखें! आपको आपका गुरु पहले मिलेगा अगर आप परमात्मा के दरबार में जाना चाहते हैं तो अपने अंदर नम्रता, प्यार और आजजी पैदा करें।

फरीदा खाक न निंदीऐ खाकू जेड न कोय।।
जीवंदयां पैरां तलै मोयां उपर होय।।

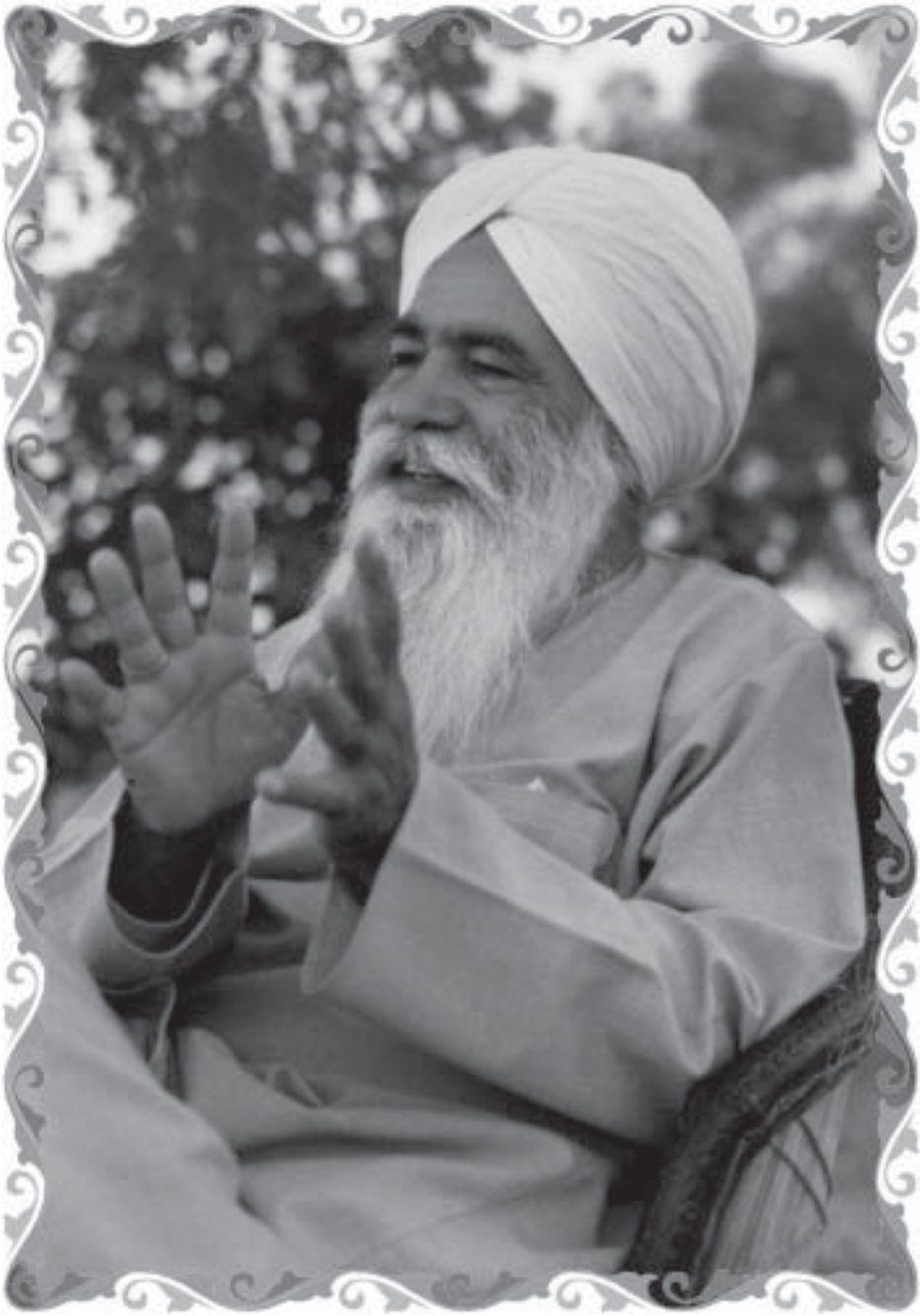

मैं बताया करता हूँ हमेशा वही आदमी दूसरे की निंदा करता है जिसे कोई लालच हो। कमाई वाले महात्मा उन पर भी दया करते हैं और परमात्मा के आगे अरदास करते हैं कि तू इन्हें बख्श दे! कहीं ये अपना जीवन न तबाह कर लें। महात्मा हमेशा अपने सेवको को भी इस रोग से बचाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हर इन्द्री में कोई न कोई स्वाद है। निन्दा न खट्टी है न मीठी है इसमें कोई स्वाद नहीं फिर भी इसने हर किसी को परेशान किया हुआ है।''

किसी ने फरीद साहब की निन्दा की। फरीद साहब के पास क्या है, आप लोग उनके पास क्यों जाते हो? फरीद साहब निन्दा करने वाले को निन्दा में जवाब नहीं देते बल्कि कहते हैं, '' प्यारेया! निन्दा तो खाक की भी नहीं करनी चाहिए। खाक भी बहुत शक्तिशाली है जीते जी खाक लोगों के पैरों के नीचे है, मौत आने पर कब्र के ऊपर हो जाती है इसलिए खाक से भी डरें।''

अगर कोई बुराई करता है तो उसे सजा देने वाला परमात्मा बैठा है। परमात्मा अच्छा कर्म करने वाले को भी देख रहा है और बुरा कर्म करने वाले को भी देख रहा है। परमात्मा जानता है कि किसको ईनाम देना है किसको सजा देनी है।

फरीदा जा लब तां नेंह क्या लब त कूड़ा नेंह।।
किचर झत लंघाईऐ छप्पर तुटै मेंह।।

कोई आदमी फरीद साहब की नकल कर रहा था। उसने कभी अभ्यास नहीं किया था अंदर रसाई नहीं थी। सबको दिखाने के लिए आँखें बंद करके बैठता, परमार्थ की बातें करता, माया का पुजारी था और हमेशा ही अमीर लोगों की तलाश में रहता था कि

अमीर लोग मेरे चेले बनें अच्छा चढ़ावा चढ़े। हर किसी से कहता कि लंगर नहीं चलता, संगत के लिए मकान नहीं है।

फरीद साहब उस आदमी के अंदर की हालत देखकर कहते हैं, ''प्यारेया! तू लोगों को दिखाने के लिए आँखें बंद करके बगुले की तरह समाधि लगाकर बैठता है लेकिन तेरा दिल माया की तरफ लगा हुआ है; एक म्यान में दो तलवारे कैसे रह सकती हैं? तेरे मन में तो लालच है परमात्मा के साथ प्यार कैसे हो सकता है? एक ही बात हो सकती है परमात्मा के साथ प्यार कर सकता है या अपने लोभ की हवस को पूरा कर सकता है।''

आप कहते हैं, ''झोंपड़ी टूटी हुई है बारिश हो रही है तू उस झोपड़ी में कितनी देर बैठकर समय बिताएगा? तुझे विषय-विकारों का रोग लगा हुआ है क्योंकि हराम का खाने से अंदर हराम ही पैदा होता है। इंसान का पिंजर तो ऐसे ही दिखाई देता है लेकिन अंदर से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने खोखला किया हुआ है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

काम क्रोध काया को गाले, ज्यों कंचन सोहागा ढ़ाले।

तेरी काया खराब हो चुकी है तू बूढ़ा हो गया है लेकिन अभी भी तेरा ख्याल भोगों से नहीं हटता। तू कितना समय इस शरीर में बैठकर परमात्मा के साथ प्यार करने का दम मारेगा?

फरीद साहब हमें घरेलू मिसालें देकर बहुत प्यार से समझाते हैं कि सच्चे-सुच्चे होकर गुरु के साथ प्यार करें। सन्त-सतगुरु जो रास्ता बताते हैं ईमानदारी से सच्चे दिल से नाम की कमाई करें। गुरु ने हमें नाम के जहाज में बिठाया है ताकि गुरु को हमें ले जाना आसान हो जाए। कबीर साहब कहते हैं:

दीन दयाल भरोसे तेरे सब परिवार चढ़ायो बेड़े।
जे तिस भावे तां हुक्म मनावे इस बेड़े को पार लंघावे।।

महात्मा अपने गुरुदेव के भरोसे इस बेड़े को संसार में ठेल देते है कि हे मालिक! तू ही इन आत्माओं को भेजने वाला है तू ही इनका इंतजाम करता है; तू ही इन्हें अपने चरणों में जगह दे सकता है। तेरी मर्जी है तू इनसे अभ्यास करवा या न करवा, हम तेरी दया से तेरे आसरे बैठे हैं।

जब इंसान सारे सहारे छोड़कर सिर्फ गुरु के सहारे हो जाता है तो गुरु को भी हमारा फिक्र हो जाता है। अगर हम अपना ख्याल बच्चे की तरह बनाएं तो गुरु हमारी हर बात पूरी करता है।

जे गुरु झिड़के तां मीठा लागे बख्शे तां गुरु वडयाई।
लोग सलाहे तो तेरी उपमा निन्दया छोड़ न जाई।।

यह कह लेना आसान है कि अगर गुरु डाँटे तो मीठा लगता है। गुरु की डाँट उन्हें प्यारी लगती है जो अपने अंदर ऐब देखते हैं। वे कहते हैं कि हमारे अंदर ऐब होगा तभी गुरु हमें डाँटते है अगर गुरु बख्श देता है तो यह भी उसकी बड़ाई है। अगर लोग हमारी उपमा करते हैं तो इसमें भी तेरी बड़ाई है, हम तो इस काबिल नहीं थे कि अच्छे बन जाते यह तो तेरी महिमा है।

अगर लोग निन्दा करते हैं तो क्या हमने तेरा दरवाजा, तेरी बड़ाई छोड़ देनी है? हमें तो तेरे वैराग का, तेरे प्यार का, तेरी महिमा गाने का रोग लगा हुआ है अब यह छूट नहीं सकता।

अमली जीवे अमल खाए त्यों हर जन जीवे नाम ध्याए।

जिस तरह अमली अमल में ही अपनी जिंदगी समझता है। वह जानता है अगर मैं नशा नहीं करूंगा तो मर जाऊंगा मेरे शरीर में दर्द होगा इसी तरह मालिक के प्यारे उस मालिक की गुरु की महिमा गाते हैं। उनके जीवन में भी वही लय चलती है। वे जब परमात्मा को भूल जाते हैं तो मौत महसूस करते हैं कि ये साँस बेकार चल रहे हैं। जो दम गाफिल था वही काफिर हो गया है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

ईक छिन विसरे स्वामी जानो बरस पचासा।

अगर मालिक एक सैंकिड जितना भी विसर जाता है तो पचास सालों जैसा बिछोड़ा पड़ जाता है। हम भी फरीद साहब की तरह अपने दिल में उठते-बैठते, सोते-जागते, अपने गुरुदेव को याद करें। अंदर जाकर उसकी सच्ची महिमा को देखें कि वह हमारे लिए दरवाजा खोलता है, हमें गले लगाता है। वह प्यार देने के लिए ही आता है। हमें इस जीवन से फायदा उठाना चाहिए।

***

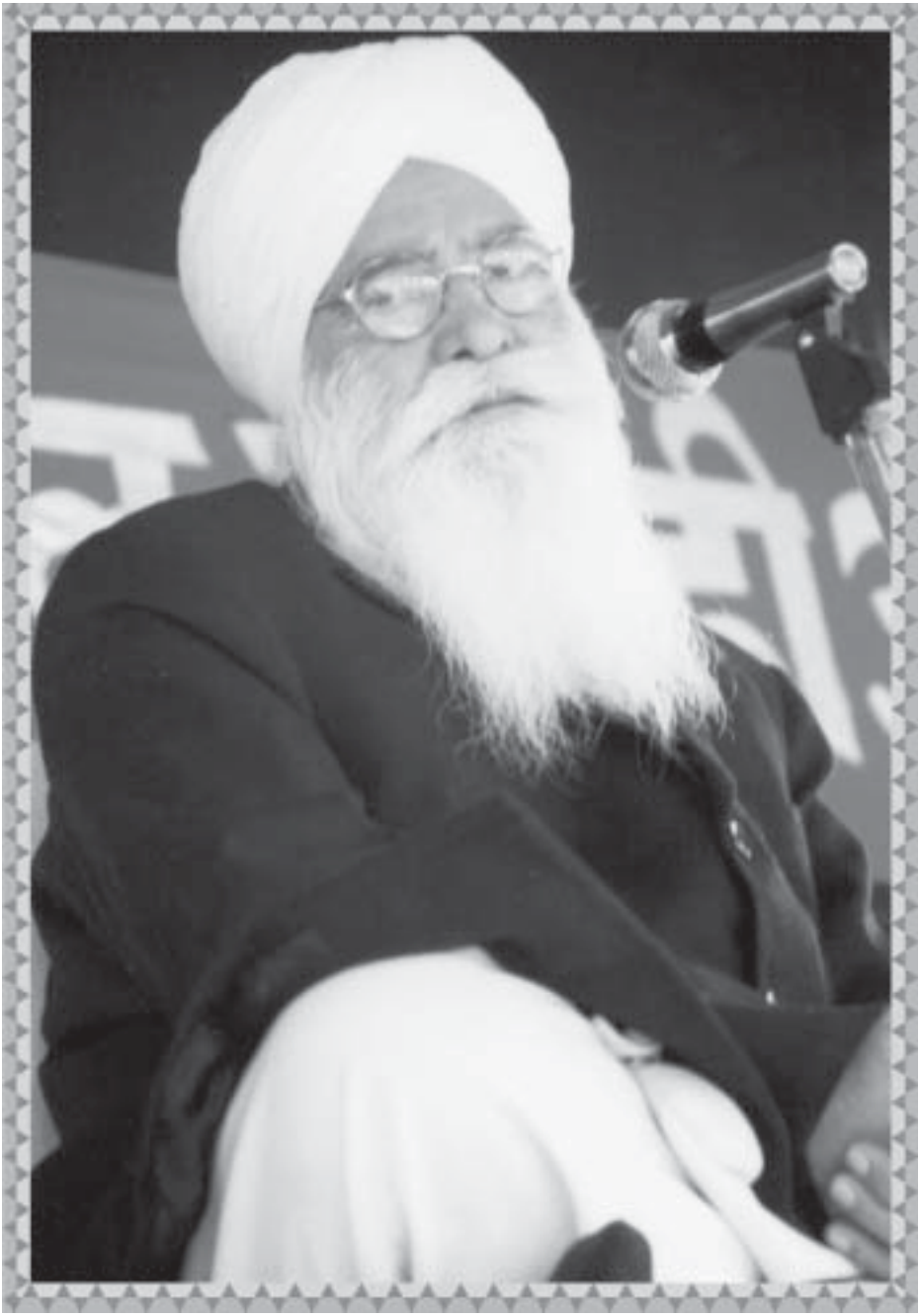

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *अगर कोई व्यक्ति हमारे साथ काम करते हुए चोरी करे और हमारे पास उसका सबूत न हो तो हमें उस बारे में क्या करना चाहिए ?*

बाबाजी: जब हमारे पास इस बात का कोई सबूत नहीं कि यह चोर है तो तहकीकात करनी बहुत जरूरी है। ऐसा तो नहीं कि कहने वाला उसके ऊपर तोहमत लगा रहा है या हमारा मन हमें धोखा देकर जलील कर रहा है।

इतिहास में कई ऐसे भी सबूत मिलते हैं कि वह इंसान चोर नहीं होता बल्कि भक्त, अच्छा इंसान होता है। हम उसकी तहकीकात नहीं करते और उसे बड़ी सख्त सजा दे देते हैं।

हिन्दुस्तान में ऐसे बहुत से वाक्यात लिखित रूप में आए हैं जिनका इस सवाल के साथ खास सम्बंध है। आजकल जिला स्यालकोट पाकिस्तान में है। किसी समय स्यालकोट राजा सालवान की राजधानी थी। राजा सालवान अच्छा राजा था। जब वह बुजुर्ग हो गया तो काम ने जोश मारा, उसने और शादी करवा ली। उसकी पहली स्त्री जिन्दा थी उससे एक बच्चा भी था, उस बच्चे का नाम पूरन था वह काफी भक्तिभाव वाला था।

पहले समय में और आज भी प्रधान और वजीर ज्योतिषियों व तांत्रिकों पर विश्वास रखते हैं। इसी तरह राजा सालवान ने ज्योतिषियों से पूछा कि मेरे घर जो लड़का पैदा हुआ है यह मेरे लिए कैसा है? ज्योतिषियों ने कहा, ''यह लड़का तेरे लिए ठीक

नहीं। तू बारह साल तक इसका चेहरा मत देखना, इसे धरती के नीचे ही रखा जाए तो ठीक रहेगा।'' राजा ने धरती के नीचे जगह बनवाकर लड़के की जरूरत का सारा सामान और उसका ध्यान रखने वाले भी रख दिए। जब वह लड़का बारह साल का हुआ तो उसे बाहर आने के लिए कहा गया।

लड़के ने बाहर आने में भी कुछ समय लगाया। जब वह लड़का पंद्रह-सोलह साल का हुआ तो राजा ने अपने बेटे से कहा, ''तू अपनी माताओं को माथा टेककर उनसे आशीर्वाद लेकर आ।'' उस लड़के की अच्छी सेहत थी क्योंकि बादशाह के घर में अच्छे खाने थे, वह तपी-त्यागी था। वह लड़का सब रानियों के पैर छूता गया। लूना नाम की नौजवान रानी थी। जब वह लड़का रानी लूना के पैर छूने लगा तो उस रानी ने कहा, ''तू मेरी इच्छा पूरी कर।'' लड़के ने कहा कि तू मेरी माता है। बेटा माता के साथ भोग कैसे कर सकता है? मैं एक राजा का बेटा हूँ जब पिता गुजरेगा तो मैं न्यायकारी कैसे बनूँगा। प्रजा और राजा भी नर्कयामी बनेंगे इसलिए ऐसा नहीं हो सकता। रानी ने कहा, ''तू मेरे पेट से पैदा नहीं हुआ तू मेरा पुत्र नहीं।'' लड़के ने कहा कि मेरे पिता से तेरी शादी हुई है बेशक मैं तेरे पेट से पैदा नहीं हुआ फिर भी मैं तेरा बेटा हूँ।

जब पूरन किसी भी तरह रानी के काबू नहीं आया तो रानी ने धमकाया कि मैं तुझे राजा से जो चाहे सजा दिलवा सकती हूँ। पूरन ने कहा, ''मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं।'' रानी ने राजा से शिकायत की कि जिसे तू बड़ा अच्छा बेटा मानता है उसने मेरे साथ बुरी करतूत की है?'' राजा ने तहकीकात नहीं की। पूरन को कचहरी में बुलाकर सख्त सजा सुना दी कि इसके हाथ-पैर काटकर कुँए में फेंक दो; जल्लादों ने पूरन को कुँए में फेंक दिया।

कुछ समय बाद गोरखनाथ के चेले ने पानी निकालने के लिए कुएं में डोल लटकाया तो पूरन ने अपने टुन्डों को उस डोल में फँसा दिया। योगी ने आवाज दी कि हमारा डोल किसने पकड़ा है? पूरन अभी जिन्दा था उसके साँस चल रहे थे, उसने कहा कि मैं इंसान हूँ मुझे बाहर निकालें। योगी डोल छोड़कर डरकर भाग गया। उसने गोरखनाथ से बात की कि कुएं के अंदर से कोई आवाज आ रही है। गोरखनाथ ने कुएं पर आकर अपनी रिद्धि-सिद्धि के बल से उसके अंग साबुत किए और उसे बाहर निकाला।

जिसको राखे साईयां मार सके न कोए, बाल न बांका कर सके जे जग बैरी होए।।

इस तरह परमात्मा ने पूरन की मदद की। वह गोरखनाथ से सिद्धि प्राप्त करके अच्छा जती-सती योगी बना।

पूरन को जन्म देने वाली माता इच्छिया रो-रोकर अन्धी हो चुकी थी। पूरन के लिए जो बाग लगाया गया था उसके जाने के बाद वह बाग विरान हो चुका था क्योंकि किसी ने उस बाग में पानी नहीं दिया था। राजा भी बहुत उदास रहता था।

कुछ समय बाद पूरन योगी स्यालकोट आया। जब पूरन ने स्यालकोट पहुँचकर उस बाग में पाँव रखा तो कुदरत के करिश्मे से वह बाग हरा-भरा हो गया। किसी ने माता इच्छिया को बताया कि यहां एक ऐसा योगी आया है शायद उसके पास जाने से तेरी आँखें ठीक हो जाएं। चाहे तू उसका दर्शन नहीं कर सकेगी फिर भी उसकी आवाज तो सुन सकेगी। वह नहीं जानती थी कि उसका बेटा अभी जीवित है और वह सिद्ध गति को प्राप्त है।

जब माता इच्छिया योगी के पास गई तो उसकी छातियों में दूध की धारा बह निकली, प्यार ने जोश मारा तो उसे आँखों से

दिखाई देने लगा। माता इच्छिया ने पहचान लिया कि यह मेरा बेटा है। सारे शहर में यह बात चल रही थी कि पूरन ही आ गया है। वह बहुत बड़ा योगी है। जो भी पूरन योगी के पास जाता है उसकी मुरादें पूरी हो जाती हैं।

घर की कर्ता-धर्ता लूना ही थी। पूरन की माता को तो घर से निकाला हुआ था कि इसके पेट से अच्छी संतान नहीं हुई। आखिर राजा सालवान और रानी लूना पुत्र की मुराद पूरी करवाने के लिए पूरन के पास गए। पूरन को सारी घटना का पता था। पूरन ने राजा से कहा, ''बादशाह सलामत! आपके हाथ की रेखा बता रही है कि आपके घर पुत्र तो पैदा हुआ है, क्या आपको उस पर सब्र नहीं?''

राजा ने कहा, ''महात्मा जी! मेरे घर पुत्र तो पैदा हुआ था लेकिन उसका नाम लेना भी ठीक नहीं क्योंकि वह बड़ा बदमाश था। उसने माता के साथ ही व्याभिचार करने की कोशिश की तो मैंने उसे बहुत सख्त सजा दे दी।'' पूरन ने हँसकर कहा, ''ऐसा नहीं हो सकता। आप झूठ बोल रहे हैं अगर आप सच बता दें तो भगवान इस समय आपकी मुराद पूरी कर सकता है।''

एक बार महान अकबर ने बीरबल से पूछा था, ''दुनिया में कौन-सी चीज़ मीठी है?'' बीरबल ने कहा, ''गरज सबसे मीठी है। गरज इंसान से कुछ भी करवा लेती है।''

लूना ने कहा, ''मेरी गोद हरी-भरी हो जाए इसलिए मैं सच कहती हूँ कि उस लड़के का कोई कसूर नहीं था सारा ऐब मुझमें ही था।'' यह सुनकर राजा को गुस्सा आया वह तलवार से रानी का सिर काटने लगा। पूरन योगी ने राजा की बाँह पकड़कर कहा, ''देखो राजा! आपने पहले भी सोच-विचार से काम नहीं लिया

तहकीकात नहीं की कि वह बात कितनी सच और कितनी झूठ थी। अब भी आप विचार नहीं कर रहे। उस समय भी आपने गुस्से में अपने बेटे को सजा दी और अब भी गुस्से में आप रानी का गला काटने लगे हैं।'' पूरन भक्त ने अपने पिता को समझाया कि न्याय करने से पहले तहकीकात करना बहुत जरूरी है।

प्यारेयो! घरों में ज्यादातर झगड़े बिना विचार के ही होते हैं। हमारे अंदर घृणा इसलिए आती है क्योंकि हम विचारते नहीं। हमारे अंदर क्रोध भी इसलिए पैदा होता है कि हम विचारते नहीं। क्या क्रोध करने से कभी कोई समस्या हल हुई? डॉक्टर भी कहते हैं कि क्रोध से ब्लड-प्रेशर हो जाता है, खून की हरकत तेज हो जाती है, क्रोध से कई बीमारियाँ लग जाती हैं।

अगर हमारा कोई दोस्त संसारी यात्रा पूरी करके चला जाता है हम रोते हैं क्योंकि हम विचारते नहीं अगर हमें यह विचार आ जाए कि जो पैदा हुआ है वह सदा नहीं रहता हमने भी नहीं रहना। हम उस चीज़ के लिए रोएं जो उसके साथ हुई है हमारे साथ नहीं होगी अगर हम विचार करें तो हम मालिक का भाणा मानेंगे।

एक बार महाराज सावन सिंह जी सतसंग करके उठे तो एक सतसंगी ने आपसे कहा, ''मुझे पहले अभ्यास में रोज़ आपके दर्शन होते थे, अब कई दिनों से मुझे आपके दर्शन नहीं हो रहे।'' महाराज जी ने हँसकर कहा,''तेरे मन में कोई चिंता होगी?'' उसने कहा,''हाँ जी! मेरा लड़का गुजर गया था मुझे उसकी बहुत चिंता रहती है।'' महाराज जी ने कहा,''देख प्यारेया! चिंता से कभी कोई काम नहीं सँवरता। चिंता चिता के बराबर है। चिंता ही समस्याएं खड़ी करती है। हमें मालिक का भाणा मानना चाहिए।''

एक प्रेमीः *आप हमें बताएं कि गुरु और पाँच मण्डलों के मालिक के बीच क्या सम्बन्ध होता है?*

बाबाजीः गुरु सबसे प्यार करता है। जो जीव गुरु के साथ अंदर जाते हैं उसे मण्डल के मालिक नहीं रोकते बल्कि उसका स्वागत करते हैं। गुरु सतपुरुष का अवतार होता है, गुरु का मण्डल के मालिकों से ताल्लुक होता है। गुरु वह ताकत है जिसके अंदर धरती पर आकर अनहद शब्द और अखंड कीर्तन प्रकट होता है। गुरु देहधारी शब्द होता है। गुरु माया के जाल में फँसी हुई आत्माओं को लेने के लिए इस संसार में आता है और अपनी बच्ची आत्मा को मन-माया की कैद से छुड़ाकर ले जाता है।

एक प्रेमीः *काफी समय हो गया है हमने आपको भजन गाते हुए नहीं सुना?*

बाबाजीः मुझे अफसोस है कि न्यूयोर्क में मेरी आवाज खराब हो गई थी और मैं शब्द नहीं गा सका था। उसके बाद मैं कभी भजन नहीं गा सका, मैं इसकी बहुत कमी महसूस करता हूँ। मेरी असल आवाज तो प्यारे कृपाल के सामने ही निकली थी। मुझे भजन गाने का बहुत शौक होता था लेकिन अब मैं कोई भजन पूरा नहीं गा सकता। मेरे भजनों की अच्छे कलाकारों ने बहुत प्रशंसा की कि आपकी आवाज बड़ी मीठी और प्यारी है। अब मैं आपसे भजन सुनकर ही अपनी गुजर कर लेता हूँ।

एक प्रेमीः *मैंने सुना है कि आप महाराज जी की दृष्टि डलवाने के लिए किसी की बस चुराकर ले गए थे, वह कहानी सुनाए।*

बाबाजीः यह कहानी सच है क्योंकि जब दिल में दर्शनों की इच्छा हो जाए तो उस समय बेबसी हो जाती है। जिसके दिल में

लग्न हो अगर वह प्यारा मिले तो ही वह लग्न पूरी होती है। वह बड़ा जबरदस्त गुरु था, वह प्यार से आत्मा को फँसा लेता था लेकिन भाग्यशाली जीव ही उसका हुक्म मान सके।

आपने ही मुझे यहाँ अंदर बिठाया था और कहा था कि मैं ही तेरे पास आऊँगा। आपने एक बार मुझे प्रेमियों को थ्योरी समझाने के लिए कहा तो मैंने आपके आगे विनती की, ''आप इन सबको खुला दर्शन दें, इनको अपना प्यार दिखा दे।'' हजूर ने हँसकर कहा, ''तू लोगों से मेरे कपड़े न फड़वा।''

प्यारेयो! आपका प्यार ब्यान से बाहर है। यह वही ताकत थी जिसने इस आत्मा को काबू किया। मुझमें भोलापन बचपन से ही था, मैं कभी भी गुरु के आगे चतुराई से पेश नहीं आया; मैं अपने आपको चालीस दिन का बच्चा ही समझता रहा। अपने गुरु के लिए और संगत के लिए मेरे ख्यालात आज भी ऐसे ही हैं। ***

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 8,9,10,11,12 जनवरी 2014 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में नम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई - 400 067
फोन - 098 33 00 4000